

अध्याय द्वितीय
संबंधित शोध साहित्य
का पुनरावलोकन



अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अनुसंधान कार्य के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना अति आवश्यक है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए गुड, बार तथा स्केट्स (1959) कहते हैं –

“एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उसे क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।”¹

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। समस्या से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

2.1.0 सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन का महत्व

- (1) ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
- (2) पूर्व साहित्य के अवलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के सम्बन्ध में अनादृष्टि प्राप्त हो सकें।
- (3) पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से अन्य सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
- (4) सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में लाने की आवश्यकता होती है।
- (5) किसी अन्य अनुसंधानकर्ता के द्वारा यदि वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया गया हो तो हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा।

अतः उपर्युक्त कारणों को देखने से यह ज्ञात होता है कि साहित्य के अवलोकन का अनुसंधान में बड़ा महत्व है।

¹ राय, पारसनाथ, (2006). “अनुसंधान परिचय”

2.2.0 समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

वर्तमान समस्या से सम्बन्धित शोध कार्य बहुत अधिक नहीं हुए हैं कुछ मिलते-जुलते शोध कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है

2.2.1 भारत में किये गये शोध कार्य

इन्द्रपुरकर (1968).

चन्द्रपुर के माध्यमिक विद्यालयों की भाषा संबंधी गलतियों का अध्ययन। निष्कर्ष— 1. छात्र के द्वारा शब्दों को बोलने में बार-बार गलतियाँ होती हैं। 2. मौखिक परीक्षण द्वारा यह भी पाया कि शब्दों के उच्चारण में भी बार-बार त्रुटियाँ होती हैं। 3. लिखित परीक्षण से यह पाया कि बच्चे सुनकर सही शब्द नहीं लिख पाते हैं।

अग्रवाल (1981).

पढ़ने की क्षमता का ज्ञानात्मक तथा अज्ञानात्मक कारकों के अंतर्गत सम्बन्ध का अध्ययन। उद्देश्य — विद्यार्थियों की पढ़ने की क्षमता पर व्यक्तिगत ज्ञानात्मक तथा अज्ञानात्मक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना। निष्कर्ष — 1. छात्र एवं छात्राओं के बीच उनकी पढ़ने की क्षमता, पढ़ने की आदतों, शैक्षिक उपलब्धियों, मितव्ययता, अभिभावकों के प्रति उनकी अभिवृत्ति आदि के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया पर उनकी मौखिक व अमौखिक बुद्धि क्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। 2. कला एवं विज्ञान के छात्र एवं छात्राओं के बीच उनकी पढ़ने की आवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। वह अंतर उनके उच्च एवं निम्न अंकों द्वारा निकाला गया।

सरसम्मा, एस (1984).

कर्नाटक के कक्षा-8 के अहिन्दी भाषी छात्रों पर हिन्दी के आधारभूत शब्दिक संग्रह का अध्ययन। उद्देश्य — 1. कक्षा आठ के विद्यार्थियों की हिन्दी शब्दकोश की जानकारी का अध्ययन करना। 2. कक्षा छठवीं एवं सातवीं के पाठ्यपुस्तक में दिए गए शब्दों का कक्षा-8 के विद्यार्थियों की समझ का अध्ययन करना। 3. पाठ्यपुस्तक में दिए हुए शब्दों की कक्षा-8 के विद्यार्थियों के लिये उपयुक्तता का अध्ययन करना। 4. कक्षा में शिक्षक व विद्यार्थियों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले विभिन्न शब्दों का अध्ययन करना। निष्कर्ष — 1. छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया परन्तु छात्राओं की उपलब्धि थोड़ी सी उच्च थी। 2. अंग्रेजी व कन्नड़ माध्यम के विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया परन्तु अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की उपलब्धि में ज्यादा दृढ़ता पाई गई। 3. सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

आनन्द (1985).

कक्षा-5 के विद्यार्थियों का लेखन में प्रभाव एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का निदान दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में उपचारात्मक अध्ययन। उद्देश्य-- 1. दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यालय के कक्षा-5 के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी में की गई त्रुटियों को पहचानना। 2. त्रुटियों के संभावित कारणों का अध्ययन करना। 3. एक उपचारात्मक कार्यक्रम को तैयार करके उसका विद्यार्थियों के ऊपर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। निष्कर्ष— वर्तनी में गलती का कारण मुख्यतः सही तरीके से न बोलना। अक्षरों का सही उच्चारण उम्र के बढ़ने से कोई सुधार का न होना पाया गया। इसका कारण उच्चारण की सही क्षमता की जागृति पढ़ाने की कमी के द्वारा होना

पाया गया ना कि उम्र का अन्तर से सबसे अधिक भूलने का कारण अक्षरों का अनुचित रूप से व्यवहार में लाना।

देसाई, के.जी. (1986).

कक्षा-4 के विद्यार्थियों की भाषायी क्षमता में कमियों का निदानात्मक अध्ययन एवं उसके सुधार हेतु उपचारात्मक कार्यक्रम। इसमें शोधकर्ता ने कक्षा-3 की हिन्दी भाषा पुस्तक का विश्लेषण किया और कठिन शब्दों की एक सूची तैयार की। इसके आधार पर एक परीक्षण तैयार किया गया। न्यादर्श के रूप में कक्षा 4 के 162 विद्यार्थियों जो अहमदाबाद में दो नगर निगम की शालाओं एवं दो नीजि शालाओं में पढ़ रहे विद्यार्थियों को लिया गया। निष्कर्ष - 1. पूर्व की कक्षाओं में जो विद्यार्थियों ने भाषा में सीखा उसमें अनेक दोष हैं जैसे-लेखन-त्रुटियाँ, मिसिंग लेटर, खराब लिखाई, गलत वाक्य-रचना आदि थे। 2. अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षाएँ न लेने के कारण यह दोष पैदा हुए थे साथ ही अभिभावकों का अपने बच्चों के प्रति रुचि न लेना था, विशेष रूप से नगर निगम की शालाओं में।

कुमारी नन्दा बी. (1992).

मद्रास क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी लेखन में आने वाली त्रुटियों का निदानात्मक अध्ययन। उद्देश्य- 1. केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा-10 के विद्यार्थियों के लेखन में आनेवाली त्रुटियों का अध्ययन करना। 2. त्रुटियों को व्याकरण की दृष्टि से विभिन्न कौशलों में विभक्त करना। 3. त्रुटियों के स्रोतों एवं कारणों का अध्ययन करना। 4. सभी त्रुटियों को उनकी महत्ता के आधार पर विभक्त करना और उन त्रुटियों से संबंधित अनुपात का अध्ययन करना। निष्कर्ष - कुल न्यादर्श से 75% त्रुटियों में छः प्रकार की व्याकरणीय क्षेत्र में त्रुटियाँ की जो इस प्रकार हैं।

* पद व्याख्या-97.05%

* विरामचिह्न-88.07%

* वाक्यांश-84.07%

* एक शब्द-81.69%

* विश्लेषण एवं संश्लेषण 80.86%

* मिलाना-77.65%

विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा उपलब्धि, बुद्धि तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर नकारात्मक सहसम्बन्ध की प्रतिशत में त्रुटियाँ की हैं।

गुप्ता (1998).

कक्षा-2 के विद्यार्थियों की भाषा और गणित में अधिगम कठिनाईयों की प्रकृति का अध्ययन। निष्कर्ष - निष्कर्ष यह पाया गया कि पढ़ने तथा लिखने में बच्चे बहुत गलतियाँ करते हैं। मौखिक रूप से पठन प्रक्रिया में बच्चे बहुत कमजोर पाए गए, बहुत से बच्चे गद्यांश के प्रथम वाक्य को भी नहीं पढ़ सकें। बच्चे शब्दों तथा वाक्यों की पहचान में भी बहुत सी त्रुटियाँ करते हैं, पढ़ने के कौशल की तुलना में सुनने का कौशल बच्चों में अधिक था। बच्चों की कम उपस्थिति, अभिभावकों का कम शिक्षित होना तथा गरीब होना भी अधिगम कठिनाई के प्रमुख कारण हैं।

2.2.2 एम.एड. स्तर पर हुए शोधकार्य

वाजपेयी भावना (1990).

माध्यमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समीक्षात्मक अध्ययन। निष्कर्ष – छात्र-छात्राओं की मात्रा सम्बन्धी त्रुटियों में सार्थक अंतर है। शब्द की गलतियाँ, मन से पढ़े शब्द, जिन शब्दों को छोड़ दिया के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के कारण भी स्पष्ट ज्ञान न होने के कारण उनमें उच्चारण में दोष पाया गया।

नूरजहाँ मलिक (1997).

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में हिन्दी विषय की चयनित दक्षताओं का तुलनात्मक अध्ययन। निष्कर्ष – 1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं में शब्दों और वाक्यों को देखकर लिखने की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में अधिक है। 2. अक्षरों एवं शब्दों को सही आकर व क्रम तथा उनके बीच की दूरी में अंतर की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में अधिक है। 3. चयनित दक्षताओं में 80% दक्षता उपलब्धि का शहरी बालिकाओं में 40% व ग्रामीण बालिकाओं में 30% दक्षता हासिल कर ली है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की दक्षता उपलब्धि बेहतर है।

श्रीवास्तव मिनी (1999).

प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन। उद्देश्य – 1. कक्षा-5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए उचित उपकरण का निर्माण करना। 2. कक्षा -5 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा की दक्षताओं का परीक्षण करना। 3. प्राथमिक शिक्षक/शिक्षिकाओं से साक्षात्कार करना। 4. विद्यालय के अवलोकन के आधार पर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की वास्तविक स्थिति को ज्ञात करना। 5. प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संबंध स्थापित करना। 6. कक्षा-5 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की उन्नति हेतु सुझाव देना। निष्कर्ष – 77 प्रतिशत बच्चों ने बोलने में दक्षता हासिल कर ली है। 32 प्रतिशत विद्यार्थी स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते हैं। अवलोकन पर यह भी देखा गया कि शिक्षक स्वयं उसी भाषा का प्रयोग करते हैं।

अमिता सिंह (2000).

कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन एवं निराकरण के उपाय। उद्देश्य – 1. हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाई वाले विद्यार्थियों की पहचान करना। 2. हिन्दी भाषा के अध्ययन में आनेवाली कठिनाईयों का परीक्षण करना। 3. अधिगम कठिनाई की प्रकृति एवं कारणों का अध्ययन करना। 4. शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाईयों में अंतर ज्ञात करना। 5. कक्षा-6 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाईयों के निवारण हेतु सुझाव देना। निष्कर्ष – 1. विद्यार्थियों को मुहावरों का वाक्य-प्रयोग करने में, शब्दों से वाक्य बनाने में, विश्लेषण, लिंग-भेद, मुक्तलेखन एवं संख्यालेखन में कठिनाई है। 2. अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषा में अधिक अधिगम कठिनाई का अनुभव करते हैं।

छाया सक्सेना (2001).

प्राथमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं की हिन्दी में वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन। उद्देश्य—
1. कक्षा 3,4,5 के विद्यार्थियों में हिन्दी लेखन में होने वाली त्रुटियों का अध्ययन करना। 2. अक्षरों एवं शब्दों के सही आकार, क्रम एवं उनके बीच की दूरी के सही अन्तर को समझना। 3. लिखते समय होनेवाली त्रुटियों का अध्ययन करना। निष्कर्ष — 1. कक्षा 3, 4 व 5 में अध्ययनरत बालक-बालिकाओं में परीक्षण द्वारा यह पाया गया कि लापरवाही, जल्दबाजी तथा लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव की गई। 2. मात्रात्मक तथा बिन्दुगत की त्रुटियों की अशुद्धियाँ अधिक थी तथा सभी प्रकार की त्रुटियाँ विद्यार्थियों ने लगभग की। असावधानी के कारण त्रुटियाँ पायी गई। 3. मातृभाषा तथा अन्य भाषा के कारण भी बालक बालिकाओं की लेखन में त्रुटियाँ पायी गई।

पाटील विजुकांत (2002).

हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी विद्यार्थियों का कक्षा आठवीं स्तर पर लेखन त्रुटियों का अध्ययन । उद्देश्य — हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के विद्यार्थियों का निम्नालिखित प्रकार लेखन त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन करना। 1. हिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी। 2. अहिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी। 3. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के शहरी विद्यार्थी। 4. हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण विद्यार्थी। निष्कर्ष— 1. विद्यार्थी अनुच्छेद लेखन से यह पाया गया कि जल्दबाजी, लापरवाही तथा नियमित लेखन न करने की आदत के कारण लेखन कठिनाई अनुभव की गई। 2. अरुचि, असावधानी के कारण मात्रात्मक, बिन्दुगत, चिन्हों, नुकता तथा, संयुक्ताक्षर इस प्रकार की लेखन त्रुटियाँ सभी विद्यार्थियों ने लगभग की। 3. मातृभाषा, बोली भाषा प्रभाव तथा उचित वातावरण अभाव के कारण विद्यार्थियों ने अनुच्छेद लेखन में त्रुटियाँ की। 4. विद्यार्थियों को हिन्दी का शुद्ध वर्तनी रूप, व्याकरण के नियमों की जानकारी न होने के कारण लेखन त्रुटियाँ हुई।
